सभी को नमस्कार और ऑल थिंग्स बाइबल पॉडकास्ट में आपका स्वागत है। आज इस कार्यक्रम में हम प्रेरितों के काम की पुस्तक में दिए गए उपदेशों पर चर्चा करेंगे। हम इन उपदेशों को पढ़ेंगे, उनकी व्याख्या करेंगे, उनके बारे में बात करेंगे और ऐसा करते हुए सुसमाचार का प्रचार करेंगे।
तो प्रेरितों के काम की पुस्तक में पहला उपदेश हमें प्रेरितों के काम के अध्याय 2 में मिलता है। पिन्तेकुस्त के दिन पवित्र आत्मा के आने और शिष्यों द्वारा अन्य भाषाओं में बोलने और भीड़ द्वारा उनकी बातें अपनी भाषा में सुनने के बाद, लोग भ्रमित हो जाते हैं कि ये यहूदी एक ही समय में इतनी सारी अलग-अलग भाषाएँ कैसे बोल पा रहे हैं। और इस पुस्तक के लेखक, लूका, ने उन सभी अलग-अलग क्षेत्रों और इलाकों का भी ज़िक्र किया है जहाँ से ये लोग आए थे, ताकि यह साबित किया जा सके कि पवित्र आत्मा इन शब्दों को कितनी विविध भाषाओं में बना पाया। और कुछ मामलों में, जैसा कि पद 12 में कहा गया है, कुछ लोग भ्रमित थे और पूछ रहे थे कि इसका क्या मतलब है, और कुछ लोग कह रहे थे, "उन्होंने तो बहुत ज़्यादा शराब पी ली है।
वे बहुत ज़्यादा मज़े कर रहे हैं।" और फिर हम पद 14 पर पहुँचते हैं जहाँ पतरस खड़ा होता है और पहली बार इस भीड़ को सुसमाचार सुनाता है। और यह उपदेश पतरस के उपदेशों के मूल स्वरूप का अनुसरण करता है जो हम उसके उपदेशों में देखते हैं।
वह समझाता है कि हाल के दिनों में क्या हो रहा है। इस मामले में, हाल की घटनाएँ प्रेरितों द्वारा अन्य भाषाओं में बोलने की हैं। फिर वह सुसमाचार सुनाता है कि यीशु कौन है और उसने क्या किया, और फिर वह प्रतिक्रिया देने का आह्वान करता है।
पतरस ने जो कुछ कहा है, उस पर लोगों को क्या प्रतिक्रिया देनी चाहिए? और पद 14 में लिखा है, "तब पतरस उन ग्यारहों के साथ खड़ा हुआ, और ऊँची आवाज़ में भीड़ को संबोधित करते हुए कहा, 'हे यहूदियों, और यरूशलेम के सब रहनेवालो, मैं तुम्हें यह समझाता हूँ और मेरी बात ध्यान से सुनो। ये लोग नशे में नहीं हैं, जैसा कि तुम सोच रहे हो। अभी तो सुबह के नौ ही बजे हैं।" तो जब वह कहता है, हे यहूदियों और यरूशलेम में रहने वाले तुम सब लोगों, तो आस-पास के सभी देशों से बहुत से लोग इस त्योहार में आ रहे थे, जैसा कि लूका ने आयत 8, 9, 10 और 11 में ज़िक्र किया है। वह समझाता है कि वह यहाँ सिर्फ़ यहूदियों से बात नहीं कर रहा है, बल्कि उन सभी से बात कर रहा है जो यरूशलेम आए हैं और इस त्योहार के लिए अभी यरूशलेम में रह रहे हैं। और वह कहता है कि अभी सुबह के सिर्फ़ नौ बजे हैं।
और इसका मतलब यह है कि इस त्योहार का उपवास आमतौर पर सुबह लगभग 10 बजे तक खत्म नहीं होता था। और इसलिए, आप जानते हैं, उन्होंने अपना उपवास जल्दी खत्म नहीं किया, और इसमें उस उपवास में शराब भी शामिल रही होगी। इस त्योहार के उपवास के दौरान उन्हें शराब पीने की इजाज़त नहीं थी।
और इसलिए वह कहता है, अभी सुबह के सिर्फ़ नौ बजे हैं, इसलिए हमने कुछ भी नहीं पिया है, बस यह साबित करने के लिए कि यह चमत्कारी घटना शराब के नशे के कारण नहीं हुई है। और फिर वह बताता है कि यह घटना असल में क्या है। वह कहता है कि यह शराब का नतीजा नहीं है, बल्कि पद 16, यही भविष्यवक्ता योएल ने कहा था।
तो योएल पुराने नियम में एक बहुत छोटी किताब है, जो उन भविष्यवक्ताओं के साथ मिश्रित है, जिन्हें हम छोटे भविष्यवक्ता कहते हैं। तो पद 17 से 21, योएल की भविष्यवाणी का एक प्रकार का उद्धरण है। और यह एक ऐसी भविष्यवाणी है जो पवित्र आत्मा के साथ जो हो रहा है और पवित्र आत्मा इन प्रेरितों के माध्यम से अभी जो कर रहा है, उसमें पूरी होती है।
तो भविष्यवाणी कहती है, अंतिम दिनों में, परमेश्वर कहता है, मैं अपनी आत्मा सब लोगों पर उंडेलूँगा। तुम्हारे बेटे और बेटियाँ भविष्यवाणी करेंगे। तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे।
तुम्हारे बूढ़े स्वप्न देखेंगे। यहाँ तक कि अपने सेवकों, पुरुषों और महिलाओं, दोनों पर भी, मैं उन दिनों अपनी आत्मा उंडेलूँगा और वे भविष्यवाणी करेंगे। मैं ऊपर आकाश में चमत्कार और नीचे धरती पर चिन्ह, लहू, आग और धुएँ के गुबार दिखाऊँगा।
प्रभु के महान और महिमामय दिन के आने से पहले सूर्य अंधकार में और चंद्रमा रक्त में बदल जाएगा। और जो कोई प्रभु का नाम लेगा, वह उद्धार पाएगा। और इसलिए निश्चित रूप से परमेश्वर अपनी आत्मा उंडेल रहे हैं, जो भविष्यवाणी हो रही है, जो लोग अभी अन्य भाषाओं में बोल रहे हैं, वह सब परमेश्वर द्वारा अपने लोगों पर अपनी आत्मा भेजने का परिणाम है।

और पतरस जो कहता है, वह ठीक यही है जो यहीं और अभी इस स्थान पर हो रहा है। हमें पवित्र आत्मा प्राप्त हुआ है। आप यह जानते हैं क्योंकि हम अन्य भाषाओं में बोल रहे हैं और हर कोई इसे अपनी भाषा में समझ सकता है। और इसके बारे में भविष्यवाणी की गई थी। तो वह निश्चित रूप से, यहूदियों के लिए, एक ऐसे शास्त्र का हवाला दे रहे हैं जिसे वे निश्चित रूप से जानते होंगे, जो उनकी बाइबल में है, जिसका वे इंतज़ार कर रहे थे। परमेश्वर की आत्मा उन पर आएगी और पतरस कहता है कि वह दिन आ गया है।
आखिरकार वह दिन आ ही गया। और निश्चित रूप से पद 21, जो कोई प्रभु का नाम पुकारेगा, उद्धार पाएगा, यह स्पष्ट रूप से समझाता है कि यीशु ही वह हैं जिन्हें लोग पुकार रहे हैं, कि यीशु ही वह हैं जिन्हें हमें उद्धार पाने और उद्धार पाने के लिए पुकारना चाहिए। तो पतरस इन घटनाओं की व्याख्या इस प्रकार कर रहा है कि क्या हो रहा है। और फिर पद 22 और उसके बाद, वह सुसमाचार की व्याख्या करेगा और बताएगा कि यीशु ने क्या किया और वह कौन था। इसलिए वह कहता है, इस्राएलियो, इसे सुनो। नासरत का यीशु एक ऐसा व्यक्ति था जिसे परमेश्वर ने चमत्कारों, आश्चर्यकर्मों और चिन्हों के द्वारा तुम्हारे लिए प्रमाणित किया था।
जैसा कि तुम स्वयं जानते हो, परमेश्वर ने उसके द्वारा तुम्हारे बीच में कार्य किया।
यह व्यक्ति परमेश्वर की सुविचारित योजना और पूर्वज्ञान के अनुसार तुम्हें सौंपा गया था। और तुमने दुष्टों की सहायता से उसे क्रूस पर कीलों से ठोंककर मार डाला। परन्तु परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, और मृत्यु की पीड़ा से मुक्त किया, क्योंकि मृत्यु का उस पर वश में रहना असंभव था।
और इसलिए हम यहाँ देखते हैं कि परमेश्वर, यीशु द्वारा किए गए चमत्कार, आश्चर्यकर्म, चिन्ह, चंगाई, यीशु ने लोगों के बीच में किए। वह उनके साथ था। वहाँ भी बहुत से लोग यीशु को ये कार्य करते हुए याद करते हैं।
और पतरस कहता है कि यह शुरू से ही परमेश्वर की योजना थी। उसने इसकी योजना बनाई थी, कि यीशु मरेगा और फिर मरे हुओं में से जी उठेगा, कि वह फिर से जीवित होगा। और उसे मरे हुओं में से जिलाकर, यीशु मृत्यु की सजा से मुक्त हो गया।
और बेशक, मौत की सज़ा यह है कि आप मरे हुए ही रहें और वह मौत पर विजयी है और वह उस पर विजय प्राप्त करता है, जिससे उसकी संतानें, जो उस पर विश्वास करते हैं, एक दिन जब हम पुनरुत्थान में भाग लेते हैं, मृत्यु पर भी विजय प्राप्त कर सकेंगी। और वह उन्हें यह भी बताता है कि भीड़ में कई लोग थे जिन्होंने दुष्ट लोगों, उन धार्मिक नेताओं की मदद से उसे सूली पर चढ़ा दिया। वह कहता है, तुमने यही किया।
यह परमेश्वर द्वारा भेजा गया एक मनुष्य था, लेकिन उसे यह सब सहना पड़ा। तुमने उसे मार डाला, लेकिन परमेश्वर ने उसे मृतकों में से जिलाया। वह अपने पुनरुत्थान का श्रेय मनुष्यों या किसी अन्य शक्ति को नहीं देता। वह कहता है, केवल परमेश्वर ने ही यीशु को मृतकों में से जिलाया और उसे मृत्यु पर विजय दिलाई। और फिर पद 25 से 28 तक, वह एक भजन से उद्धरण देता है। वह भजन 16, पद 8 से 11 तक का उद्धरण देता है, जहाँ वह कहता है, दाऊद ने यीशु के बारे में कहा, मैंने प्रभु को हमेशा अपने सामने देखा क्योंकि वह मेरे दाहिने हाथ है।
मैं नहीं डगमगाऊँगा। इसलिए, मेरा हृदय आनन्दित है और मेरी जीभ मगन है। मेरा शरीर भी आशा में विश्राम करेगा, क्योंकि तू मुझे मृतकों के लोक में नहीं छोड़ेगा।
तू अपने पवित्र वंश को क्षय नहीं होने देगा। तूने मुझे जीवन के मार्ग बताए हैं। तू मुझे अपनी उपस्थिति में आनन्द से भर देगा।
इसलिए पतरस दावा करता है कि यह भजन यीशु, मृत्यु और पुनरुत्थान के बारे में है जिसका उसने अभी वर्णन किया है, कि वह यीशु को मृत्यु नहीं देखने देगा, कि वह जीवित नहीं रहेगा और मृत्यु में नहीं रहेगा, फिर भी उसे जीवन में उठाया जाएगा और यीशु ही हमारे लिए जीवन का मार्ग है। और यीशु के माध्यम से हम वास्तव में जीवन और आनंद पा सकते हैं। और आगे के पदों में, पतरस इसे थोड़ा और विस्तार से समझाएगा।
वह कहता है, हे इस्राएलियो, मैं तुम्हें विश्वास के साथ बता सकता हूँ कि कुलपिता दाऊद की मृत्यु हुई और उसे दफनाया गया और उसकी कब्र आज भी यहाँ है। लेकिन वह एक भविष्यवक्ता था और वह जानता था कि परमेश्वर ने उससे शपथ लेकर वादा किया था कि वह उसके वंशजों में से एक को उसके सिंहासन पर बिठाएगा। जो होने वाला था उसे देखते हुए, उसने मसीहा के पुनरुत्थान की बात की, कि उसे मृतकों के लोक में नहीं छोड़ा गया, न ही उसके शरीर ने सड़न देखी।

परमेश्वर ने इस यीशु को जीवित किया है और हम सब इसके साक्षी हैं। परमेश्वर के दाहिने हाथ पर विराजमान होकर, उसने पिता से प्रतिज्ञा की हुई पवित्र आत्मा प्राप्त की और जो कुछ तुम देखते और सुनते हो, वह उंडेला है। क्योंकि दाऊद स्वर्ग नहीं गया।
तो पतरस यहाँ जो कह रहा है, वह यह है कि पिछले भजन, भजन 16, जिसका उद्धरण दिया गया था, कुछ लोग कहते हैं कि वह केवल दाऊद के बारे में था। दाऊद ने यह अपने बारे में लिखा था। लेकिन पतरस का यह स्पष्टीकरण कि यह गलत क्यों है, यह है कि दाऊद मर गया।
यह भजन किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में है जो मरा, शायद मरा, लेकिन मरा हुआ नहीं रहा। और पतरस कह रहा है कि दाऊद मर गया। वह मर गया और वह अभी भी मरा हुआ है क्योंकि आप उसकी कब्र देख सकते हैं।
आप वहाँ जा सकते हैं जहाँ उसे दफनाया गया था। उसका शरीर अभी भी वहाँ सड़ रहा है। लेकिन उसे परमेश्वर से यह ज्ञान प्राप्त हुआ कि यह एक भावी मसीहा के बारे में था जो मृतकों में से जी उठेगा।
इसलिए उसने मसीहा के पुनरुत्थान की बात की। कि यीशु उसका वंशज था, क्योंकि वह यीशु को कब्र में नहीं रखना चाहता था, और उसका शरीर कब्र में नहीं रहा। यानी उसके शरीर ने सड़न नहीं देखी।
हाँ, वह मर गया, लेकिन पुनरुत्थान के कारण वह मरा नहीं रहा। एक खाली कब्र थी। और वह कहता है, हम सब इसके गवाह हैं।
हमने यीशु को उसके पुनरुत्थान के बाद हमारे बीच चलते-फिरते और बातें करते देखा, और हमने उसे परमेश्वर के दाहिने हाथ पर चढ़ते देखा। यही श्लोक 33 है। और फिर यीशु ने पिता से पवित्र आत्मा प्राप्त किया।
और अब आप यहाँ जो देख रहे हैं, हम सब अलग-अलग भाषाएँ बोल रहे हैं, वह शराब नहीं है। वह कहता है, यह पवित्र आत्मा है जो यीशु ने हम पर उंडेली। योएल इसी के बारे में बात कर रहा था।
यही वह है जिसकी दाऊद को लालसा थी। यही वादा किया गया पवित्र आत्मा है। और फिर श्लोक 34 में, वह कहता है, दाऊद स्वर्ग नहीं गया।
दाऊद को ऊँचा नहीं किया गया, बल्कि उसने कहा, प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा, "मेरे दाहिने बैठ, जब तक मैं तेरे शत्रुओं को तेरे चरणों की चौकी न कर दूँ।" इसलिए, सारा इस्राएल निश्चित रहे कि परमेश्वर ने इस यीशु को, जिसे तुमने क्रूस पर चढ़ाया, प्रभु और मसीहा दोनों बनाया है। इसलिए पतरस भजन संहिता 110 का उपयोग अपनी इस बात को पुष्ट करने के लिए करता है कि यीशु पिता के दाहिने हाथ पर हैं।
वह इस छोटी सी बातचीत को लगभग दाऊद की तरह ही दर्ज करता है, जहाँ वह कहता है कि प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा, दूसरे शब्दों में, परमेश्वर, पिता ने यीशु से कहा, "मेरे पास बैठ।"
दाहिना हाथ। यह यीशु का महिमामंडन है। और फिर जब पतरस कहता है, "सारे इस्राएल को विश्वास हो जाए कि परमेश्वर ने यीशु को, जिसे तुमने क्रूस पर चढ़ाया था, प्रभु और मसीहा बनाया है।"
निःसंदेह, प्रभु यहोवा है, जो है, और मसीह अभिषिक्त है। यीशु ही है, जो है, और वही अभिषिक्त है। वही है जिसकी हम तलाश कर रहे हैं।
और पतरस का यह साहसिक दावा यह कह रहा है कि यीशु यहोवा है। वह परमेश्वर है, और वही वह लंबे समय से प्रतीक्षित मसीहा है जिसका इस्राएल इंतज़ार कर रहा था। वे इस मसीहा का इंतज़ार कर रहे थे, लेकिन उन्होंने नहीं सोचा था कि वह वही है।
और इसलिए उन्होंने उसे मार डाला, और उनकी आशा, जैसा कि वे सोचते हैं, खत्म हो गई। तो यही वह उपदेश है जो पतरस देता है। लेकिन फिर श्लोक 37 में, लोगों ने यह सुना और उनका दिल टूट गया।
और भाई ने कहा, हम क्या करने जा रहे हैं? वे सोच रहे हैं कि हमने मसीहा को मार डाला। वह सही है। हमने उसे क्रूस पर चढ़ाया।
हम ही चिल्ला रहे थे, उसे सूली पर चढ़ा दो। हमें उस पर विश्वास नहीं था। तो अब हम क्या करेंगे? उम्मीद खत्म हो गई है।
और पतरस कहता है, ऐसा नहीं है। तो अब बुलावा है। पतरस उन्हें क्या करने को कहेगा? उन्होंने यीशु को मार डाला।
अब वे बचने के लिए क्या कर सकते हैं? लेकिन पतरस कहता है कि पश्चाताप करो, अपने मार्गों से फिरो, अपने मार्गों को त्याग दो, और पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम पर बपतिस्मा लो। वह कहता है, और तुम पवित्र आत्मा का उपहार पाओगे। तुम वह उपहार पाओगे जो हमें मिला है।

और यह वादा तुम्हारे और तुम्हारे बच्चों के लिए है, और उन सभी के लिए है जो दूर हैं, उन सभी के लिए जिन्हें हमारा प्रभु परमेश्वर बुलाएगा। और इसलिए मैं सुनने वालों को भी यही जवाब देता हूँ। अगर आप सचमुच मानते हैं कि यह यीशु ही मसीहा है, कि वह आपके पापों के लिए मरा और उसका पुनरुत्थान हुआ ताकि आपको अनंत जीवन मिले, पश्चाताप हो, बपतिस्मा हो, तो आपको अपने पापों की क्षमा मिलेगी और आपको पवित्र आत्मा का उपहार मिलेगा, जो आपके उद्धार की गारंटी है और इस दुनिया में मदद है।
यह परमेश्वर का वादा है। और यह उन सभी के लिए है जो यीशु मसीहा पर विश्वास करेंगे। सुनने के लिए आप सभी का धन्यवाद।
परमेश्वर भला करे।